मणिकर्णिका का सामाजिक पक्ष

(THE SOCIAL ASPECT OF MANIKARNIKA)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के अंतर्गत
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग में
एम.फिल.उपाधि हेतु प्रस्तुत
लघु शोध- प्रबंध
(सत्र 2014-15)

शोधार्थिनी
रेखा यादव
पंजीयन सं. - 2014/02/215/018

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
साहित्य विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय साहित्य विद्यापीठ
(संसद द्वारा पारित अधिनियम, 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्विद्यालय)
गांधी हिल्स, पंचटीला, वर्धा - 442001 (महाराष्ट्र)

भूमिका

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज जातियों में बटा हुआ है। जिस कारण समाज में ऊँच-नीच की भावना का जन्म हुआ। ऊँची जाति का मनुष्य धार्मिक आधार पर अपने से छोटी जाति का शोषण करना शुरू किया। इस शोषणकारी सामाजिक हिंदू व्यवस्था का आधार वर्ण व्यवस्था है। इस तरह यह विश्व इतिहास सभ्यताओं के उत्थान और पतन का इतिहास रहा है। प्राचीन संसार पांच सभ्यताओं में विभक्त था जिनमें चीनी सभ्यता, बेबीलोन की सभ्यता (यूनान में), मेसोपोटामिया की सभ्यता (पश्चिमी एशिया में) और सिन्धु सभ्यता (भारत, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान में)। अपनी-अपनी सभ्यता और संस्कृति के अनुसार लोग अपना जीवन यापन करते थे। लेकिन लालच और सम्पति ने मनुष्यों को मनुष्यों का शत्रु बना दिया। जैसे-जैसे मनुष्य की सभ्यता का विकास होता गया वैसे-वैसे ही मनुष्य और भी क्रूर और निर्दयी होता गया और यह संघर्ष पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहा। मनुष्यों ने मनुष्यों को अपना दास बनाकर शोषण शुरू कर दिया। इस प्रकार समाज में दो वर्गों का जन्म हुआ, शोषण करने वाला शोषक वर्ग कहलाया और जिस पर शोषण किया गया वह शोषित वर्ग कहलाया। कहीं शोषण का आधार आर्थिक था तो कहीं धार्मिक।

भारतीय समाज में इसका आधार धार्मिक था। आर्य जो की चरवाह जाति के लोग थे और अपने पशुओं के लिए चारे की तलाश में इधर-उधर घूमते थे जब वे यहाँ पहुँचे तो सिन्धु सभ्यता की खुशहाली एवं भरपूर चारे तथा पानी की व्यवस्था ने उनको यहाँ निवास करने के लिए आकर्षित किया। परिणाम स्वरूप कई बार विदेशी आर्यों ने भारत पर हमला किया। क्योंकि सिंधु सभ्यता उस समय की एक विकसित और उन्नत सभ्यता थी जहाँ न धन की कमी थी न अन्न की। अंततः युद्ध में आर्यों को विजय प्राप्त हुई। युद्ध में आर्यों की विजय प्राप्ति के बाद कुछ लोग अपनी जान बचाकर जंगल में भाग गये जो कालांतर में आदिवासी कहलाएं और बचे हुए लोगों को गुलाम बनाकर अपनी दासता स्वीकार करने के लिए विवश किया गया। कालांतर में ये गुलाम ही शुद्र और अछूत कहलाएं। आर्यों ने सिंधु सभ्यता को नष्ट करके यहाँ के लोगों को अपना गुलाम बना लिया गया और उन पर अपनी वैदिक संस्कृति थोप दी। अपनी दासता को स्वीकार करने के लिए उसको धार्मिक आधार प्रदान कर दिया और अब शुरू हुई शोषण की परंपरा जो हजारों वर्षो से चलती आ रही है।

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज जातियों में बटा हुआ जिसके कारण समाज में ऊँच-नीच की भावना का जन्म हुआ। मानव पर मानव के द्वारा धार्मिक आधार पर शोषण करने का अधिकार बनाया गया। इस शोषणकारी सामाजिक हिंदू व्यवस्था का आधार वर्ण था। वैदिक संस्कृति के अनुसार समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र आदि में बांट दिया गया। वेदों में कहा गया है कि ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, भुजा से क्षत्रिय, पेट से वैश्य, और पैर से शूद्र उत्पन्न हुए। शूद्र संख्या में ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्यों से भी अधिक थी। जिनको राजसत्ता, पाप तथा अधर्म का भय दिखाकर ही शारीरिक व मानसिक रूप से गुलाम बनाया गया। 'मनुस्मृति' व अन्य धर्मशास्त्रों को प्रमाणिक मानते हुए आर्य ब्राह्मणों ने अपनी श्रेष्ठता को और मजबूत करने की नियत से यह तर्क दिया कि व्यक्ति पूर्वजन्म में अपने कर्मों के अनुसार ही वर्ण में जन्म लेता है। जिसके पूर्व जन्म के कर्म श्रेष्ठ होते हैं वह ब्राह्मण वर्ण में और जिसके पूर्व जन्म के कर्म अच्छे नहीं रहे, जिसने पाप पूर्ण कार्य किये हो उसका जन्म निम्न वर्ण में होता है। इसलिए वर्ण में जन्म होना पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम है। वर्ण में उत्पत्ति को पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम करार दिये जाने से बाकी तीनो वर्णों के लोगों के पास यह विकल्प भी नहीं रहने दिया गया कि वे वर्तमान में अच्छे कर्म के बल पर अपना वर्ण परिवर्तित कर सकें। बाकी तीनों वर्णों, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्रों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक घोषित कर दिया और ईश्वर अवतार उत्पन्न व घोषित कर उनके माध्यम ये संदेश या उपदेश दिलवा दिया कि ज्ञान व गुण दोनों से रहित होते हुए भी ब्राह्मण पूजने योग्य है। ब्राह्मणों ने अपने आपको समाज का शिक्षक व धर्म का अधिकृत प्रवक्ता स्थापित कर लिया। उनके द्वारा पाप व दुराचरण करने पर भी उन्हें पापी व दुराचारी करार देने का अधिकार किसी को नहीं दिया। 'मनुस्मृति' के अनुसार, प्रत्येक वर्ण के लोगों के निश्चित व्यवसाय हैं, उन्हें अपनी मर्जी से व्यवसाय चुनने का अधिकार नहीं है। ब्राह्मण के अलावा बाकी वर्ण के लोगों को दूसरे वर्ण के लिए निर्धारित व्यवसाय करने का अधिकार नहीं है। शूद्र को तो केवल गुलामी ही करने का काम दिया गया है।

भारतीय हिंदू समाज में जातिगत भेदभाव और धार्मिक अत्याधिक अत्याचार बढ़ने पर अनेक महापुरुषों ने इसके विरोध में अपनी आवाज बुलंद की जिनमें राजा रामोहन राय, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, ज्योतिबा फुले एवं सावित्री बाई फुले, नारायण गुरु, राजश्री क्षत्रपति शाहू जी महाराज, बिरसा मुंडा,

संत गाड़गे महाराज, अछूतानन्द, पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर, महात्मा गाँधी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर और कांशीराम साहेब आदि का नाम बड़े ही सम्मान से लिया जाता हैं । इन सभी महापुरुषों ने अपनी विचारधारा के अनुसार इस जातिवादी व्यवस्था का घोर विरोध किया और शुरू हुआ शोषण और अत्याचार के विरूद्ध एक जनांदोलन शुरू किया गया । लोगों ने अपने गुस्से को प्रकट करते हुए हिंदू धर्म ग्रंथों की प्रमाणिकता पर प्रश्न उठाये । शूद्रों और दलितों ने अपनी लेखनी द्वारा शोषण और अत्याचारों की कहानी विश्व के सामने रखी जिसमें एक वर्ग के लोगों को पशु से भी नीच मानकर अत्याचार किया गया । दलित वर्ग आज जाति बंधनो को तोड़कर इतिहास की उस गहन अंधकार की कारा को तोड़ने को छटपटा रहा है ।

वर्गीय चेतना आने के बाद दलितों ने ब्राह्मण साहित्य का खंडन करते हुए अपने साहित्य का सृजन किया जिसे दलित साहित्य कहा गया जिसमें उन्होंने अपनी पीड़ा को कहानी, कवितओं, उपन्यासों और आत्मकथाओं के माध्यम से व्यक्त किया। दलित आत्मकथाए आज हिंदी या मराठी में ही नहीं अपितु लगभग सभी भारतीय भाषाओं में लिखी जा रही है। यद्यपि इसका सिलसिला मराठी में पहले प्रारम्भ हुई। दलित आत्मकथाए चाहे किसी भी भाषा की रही हो ये पाठको की अत्मा को झकझोर देती है। दलित आत्मकथाओं की श्रेणी में तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया'और'मणिकर्णिका' को साहित्यकार एक कालजयी रचना मानते हैं जोकि पाठको को सामाजिक कुरूपता के दर्शन कराती हैं।

प्रस्तुत शोध विषय क्षेत्र के अंतर्गत तुलसीराम की आत्मकथा का दूसरा खंड " मणिकर्णिका" के शीर्षक के अंतर्गत **'मणिकर्णिका का सामाजिक पक्ष'** लिया जाएगा । शोध के लिए इस विषय को चुनने के पीछे एक मुख्या कारण था कि मैं जब पहली बार अपने मित्र सुभाष सिंह से डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा का प्रथम खंड "मुर्दहिया" के बारे में सुना तो मुझसे रहा नहीं गया और मेरे मन में पुस्तक को पढ़ने की असीम जिज्ञासा ने जन्म लिया। जब मैंने पुस्तक को पढ़ना शुरू किया तो फिर उसको खत्म करके ही दम लिया। पुस्तक को पढ़ते समय कई बार मेरा मन विचलित हो उठा की क्या बाकई एक व्यक्ति इतने संघर्ष करने के बाद भी जीवित रह सकता हैं । पुस्तक में समाज में फैली बुराइयों और उनका लेखक के जीवन पर प्रभाव बड़ा ही दर्दनाक वृतांत प्रस्तुत करता हैं और दूसरी तरफ जीवन में कभी न हारने की शिक्षा प्रदान करता हैं। पुस्तक

को समाप्त करने के पश्चात मेरी लेखक से मिलने की इच्छा हुई लेकिन ये सब तब हो पाया जब मेरा महात्मा गाँधी हिंदी अंतरराष्ट्रीयविश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में एम. फिल (हिंदी) लिखित परीक्षा में चयन हुआ और मुझे साक्षात्कार हेतु एक शोध प्रस्ताव बनाना था। ठीक उसी समय तुलसीराम जी आत्मकथा का दूसरा खंड "मणिकर्णिका" भी आ चुका था। मैंने तुरंत खरीद कर शीघ्र ही पूरा पढ़ लिया । पुस्तक के समाप्त होने पर मैंने निश्चय कर लिया था कि अब मैं अपना शोध प्रस्ताव इसी पर तैयार करुँगी लेकिन मेरे मस्तिष्क में कुछ प्रश्न उठ रहे थे जिसके निवारण के लिए मुझे लेखक से मिलना अनिवार्य हो गया था। अन्तत: मुझे अपने मित्र की सहायता से लेखक से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मिलने से पूर्व मेरे मन में थोडा भय था लेकिन जब मैं लेखक से मिली तो उनकी उदारता देखकर आश्चर्यचकित थी कि वे मुझे अपनी पुत्री की भांति स्नेह करते हुए करीब 2 से 3 घंटो तक मेरे प्रश्नों के उत्तर देते रहे क्योकि उनका कोई जबाब छोटा नहीं होता था। मेरे वर्धा विश्वविद्यालय में चयन के बाद, मैं जब भी दिल्ली जाती उनसे जरुर मिलती और वे मुझे अपनी पुत्री की भांति स्नेह करते हुए मेरी पढ़ाई के बारे पूछते। इस शोध के चुनाव में मेरे निर्देशक और अध्यापक डॉ. उमेश कुमार सिंह का भी अविस्मरणीय योगदान रहा हैं क्योंकि उन्होंने मुझे पूर्ण अकादमिक स्वतंत्रता प्रदान करते हुए मेरा मार्गदर्शन किया।

चूकि इस शोध का क्षेत्र एक आत्मकथा हैं तो इसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि जाति आधारित भारतीय हिंदू समाज भेदभाव का केंद्र रहा है जिसके कारण एक वर्ग को अपमान भरा जीवन व्यतीत करना पड़ा। **'मणिकर्णिका का सामाजिक पक्ष'**, के अध्ययन के अंतर्गत उन उत्तरदायी कारणों का भी पता लगाया जाएगा जिसके कारण लेखक एवं उनकी जाति के लोगों को सदियों से अपमान सहन करना पड़ रहा हैं। इस आत्मकथा में सवर्ण और दलितों की सामाजिक, राजनीतिक तथा साथ में आर्थिक स्थितियों की जड़ तक अध्ययन द्वारा पहुंचना मेरे शोध का विषय क्षेत्र होगा। 'मणिकर्णिका का सामाजिक पक्ष' प्रस्तावित शोध विषय एक उत्पीडन, शोषण और सामाजिक-राजनीतिक चेतना पर आधारित आलोचनात्मक साहित्य है। इसलिए इसका अध्ययन समाज–शास्त्रीय पद्धति पर आधारित है।

प्रस्तुत शोध विषय को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया हैं । प्रथम अध्याय जिसका शीर्षक **"तुलसीराम का संक्षिप्त जीवन-संघर्ष एवं तात्कालिक परिस्थितियाँ"**, में लेखक के जीवन से जुड़े कुछ विशेष पहलू जैसे उनका जन्म स्थान एवं उनकी शिक्षा पर आधारित है। इस अध्याय में ये भी दिखाया जाएगा कि लेखक ने किस जातिगत भेदभाव को सहन करते हुए अपनी शिक्षा को जारी रखा।

द्वितीय अध्याय जिसका शीर्षक **"हिन्दी साहित्य में दलित आत्मकथाओं का परिचय"**, में हिन्दी भाषा में लिखित दलित आत्मकथाओं में सामाजिक पक्ष के अध्ययन पर आधारित है कि किस प्रकार से अन्य दलित लेखकों ने भी अपनी अत्मकथाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त जाति पर आधारित भेदभाव को दर्शाया है ओर अपनी पीड़ा को पाठको के समक्ष रखा है। इस अध्याय के अतर्गत मुख्यतः मोहनदास नैमिशराय की 'अपने-अपने पिंजरे', ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन', सूरजपाल चौहान की 'तिरस्कृत', श्यौराज सिंह बैचेन की 'मेरा बचपन मेरे कंधो पर', कौसल्या वैसन्त्री की 'दोहरा अभिशाप', डी. आर. जाटव की 'मेरा सफ़र मेरी मंजिल', माता प्रसाद की 'राजभवन से झोपडी तक' और डॉ. उमेश कुमार सिंह की 'दुःख सुख के सफ़र में', आदि आत्मकथाओं में चित्रित दलितों की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है ।

तृतीय अध्याय तुलसीराम की आत्मकथा का प्रथम खंड **"मुर्दहिया में चित्रित समाज"** पर आधारित होगा कि किस प्रकार से लेखक ने अपने जीवन के आरंभिक दिनों में जाति पर आधारित अपमान को सहन किया ओर किस प्रकार उसका लेखक के जीवन पर प्रभाव पड़ा।

चतुर्थ अध्याय इस शोध प्रस्ताव का मुख्य केंद्र बिंदु है । इस अध्याय के अंतर्गत **"मणिकर्णिका में चित्रित समाज"** में सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डाला जाएगा ओर अध्ययन किया जाएग कि गाँव ही नहीं बल्कि बनारस जैसे विश्व प्रशिद्ध धार्मिक स्थल भी छुआछूत के दंस से अपने आपको बचा नहीं पाये।

पंचम अध्याय जिसका शीर्षक हैं **“ मणिकर्णिका में चित्रित संघर्ष”,** में लेखक के सामाजिक संघर्ष पर केंद्रित है, ओर इसमें इन तथ्यों का भी अध्ययन किया जाएगा कि लेखक ने किस प्रकार सामाजिक कुरीतियों का सामना करते हुए इस अपमानजनक सामाजिक व्यवस्था का विरोध किया।

इस शोध के अंत में **उपसंहार** होगा जिसमे सम्पूर्ण शोध का सार होगा।

विषय सूची

		पृ.सं.
	भूमिका	VI-XI
प्रथम अध्याय	**तुलसीराम का संक्षिप्त जीवन संघर्ष और तात्कालिक परिस्थितियाँ**	2-22
द्वितीय अध्याय	**हिंदी साहित्य में दलित आत्मकथाओं का परिचय**	24-70
	सामाजिक संघर्ष और चेतना	25
	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	31
	हिंदी दलित आत्मकथाओं का परिचय	44
	अपने-अपने पिंजरे	47
	जूठन	50
	तिरस्कृत	53
	मेरा बचपन मेरे कंधो पर	56
	मेरी पत्नी और भेड़िया	58
	दोहरा अभिशाप	61

	झोंपड़ी से राजभवन तक	63
	मैं भंगी हूँ	64
	दुःख सुख के सफर में	66
तृतीय अध्याय	**मुर्दहिया में चित्रित समाज**	72-99
	मुर्दहिया में अभिव्यक्त दलितों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति	73
	अशिक्षा और अंधविश्वास	75
	दरिद्रता और आर्थिक शोषण	80
	सामाजिक व्यवस्था और छुआछूत	**83**
	लेखक की शिक्षा और जातिगत भेदभाव	86
	मुर्दहिया में अभिव्यक्त लोकजीवन	91
चतुर्थ अध्याय	**मणिकर्णिका में चित्रित समाज**	101-130
	मणिकर्णिका की धार्मिक पृष्ठभूमि और अंधविश्वास	102
	वेश्यावृत्ति और समाज	108
	धार्मिक उत्सव और साम्प्रदायिकता	110
	मणिकर्णिका में अभिव्यक्त सामाजिक भेदभाव	112

	किराये का मकान	113
	मंदिर में प्रवेश	117
	उच्च शिक्षा	120
	मणिकर्णिका में अभिव्यक्त दलित शोषण एव उत्पीड़न	123
	आर्थिक शोषण	124
	शेरपुर कांड और दलित उत्पीडन	127
पंचम अध्याय	**मणिकर्णिका में चित्रित संघर्ष**	132-167
	मणिकर्णिका में अभिव्यक्त सामाजिक एवं शैक्षिक संघर्ष	132
	चोरी की घटना और हृदय-परिवर्तन	133
	मजदूरी करना	135
	किराये का मकान और सामाजिक संघर्ष	140
	भुखमरी	142
	मणिकर्णिका में अभिव्यक्त छात्र राजनीति और संघर्ष	144
	प्रथम छात्र आन्दोलन और उसका प्रभाव	145
	राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.आर.एस) और उसकी गतिविधियाँ	150

जे. पी.आन्दोलन और राष्ट्रीय राजनीति 152

माओवाद तथा सोवियत संघ 153

कम्युनिस्ट पार्टी तथा दलित प्रश्न 154

मणिकर्णिका में अभिव्यक्त वैचारिक प्रभाव 157

मार्क्सवाद 157

अम्बेडकरवाद 162

बुद्धवाद 165

उपसंहार 169-176

संदर्भ ग्रन्थ सूची 178-186